सतत विकास पर रेडियो धारावाहिक # 21

एपिसोड शीर्षक - भूजल दोहन : जरा संभलकर

अवधिः 27 मिनट

समन्वयकः श्री बी.के. त्यागी **स्क्रिप्टः श्रीनिवास ओली**

पात्र परिचय

1. मनसुख- ग्रामीण / चालीस वर्ष
2. हीरा – मनसुख की पत्नी / पैंतीस वर्ष
3. रामबाबू– ग्रामीण / पचपन वर्ष
4. सरपंच- गांव के सरपंच / पैंसठ वर्ष
5. गरिमा- ग्राम विकास अधिकारी / पैंतीस वर्ष
6. डा. मनोज- भूजल विशेषज्ञ / पचास वर्ष

SIGNATURE TUNE ..... FADE OUT

उद्घोषक: (*Welcome + Recap + Intro*) रेडियो विज्ञान धारावाहिक ..... में आपका स्वागत है। आज के एपिसोड में हम बात करेंगे भूमिगत पानी के बेतहाशा इस्तेमाल और उसके दुष्परिणामों पर। तो आइए चलते हैं उत्तर प्रदेश के एक गांव में, जहां भूजल के लगातार गिरते स्तर से ग्रामीण काफी परेशान हैं। और जानतें है क्या हैं उनकी मुश्किलें और उन मुश्किलों से निपटने की तरकीबें।

---------- **SIGNATURE TUNE**----------

SCENE ONE

(जमीन में खुदाई करने वाली ड्रिल मशीन चलने की आवाज / लोगों की मिलीजुली आवाज़ें)

रामबाबूः क्यों भाई मनसुख .....। मशीन अभी तक चल रही है। पानी नहीं निकला क्या।

मनसुखः बैठो, बैठो.... रामबाबू भाई। बैठो।

रामबाबूः क्या हुआ ? क्या बात है ? चेहरा पूरी तरह से उतरा हुआ लग रहा है।

मनसुखः ***(उदास स्वर में)*** अरे क्या कहें.....। अस्सी (80) फिट से ज्यादा की खुदाई हो चुकी है। अभी तक पानी की एक बूंद नहीं दिख रही।

रामबाबूः **(आश्चर्य से)** अस्सी फिट.....

मनसुखः हां भाई.... इतने पर भी पानी तो दूर अच्छी गीली मिट्टी भी नहीं आ रही है। चार साल पहले पीपल के पेड़ के सामने ट्यूबवेल की खुदाई की थी। तब तो पैंसठ- सत्तर पर ही पानी निकल आया था। पर अब उसमें भी पानी कम हो गया है। नए ट्यूबवैल पर पानी नहीं निकल रहा। अब कहां तक खोदें आखिर।

रामबाबूः ये तो बड़ी दिक्कत की बात है।

मनसुखः दिक्कत.....। दिक्कत क्या कह रहे हो रामबाबू। गृहस्थी चलानी मुश्किल हो जाएगी।

रामबाबूः वो तो है भाई। पानी ही नहीं मिलेगा तो खेती कैसे होगी। बारिश के हाल तो तुम देख ही रहे हो।

मनसुखः भय्या.....बारिश के भरोसे रहे, तो हो गई खेती-किसानी। अब वो दिन तो रहे नहीं, जब बारिश समय पर हो जाती थी।

रामबाबूः और अगर यही हाल रहा तो पीने के पानी के भी लाले पड़ जाएंगे।

मनसुखः और क्या भाई। पिछली बार देखा नहीं, गर्मियों में गांव के कुंए के क्या हाल हुए थे। नंबर लगा कर मिल पाया था पानी।

रामबाबूः सही कहा भाई। पता नहीं जमीन का पानी इतना कम कैसे हो रहा है। केवल तुम ही नहीं, पूरा गांव इससे परेशान है।

मनसुखः हां, लेकिन पहले तो ऐसी समस्या नहीं थी। बाबा बताते हैं कि उन्होंने गांव के कुंए का पानी कभी कम होते देखा ही नहीं।

रामबाबूः तो फिर अब ऐसा क्या हो गया।

(बात को बीच में काटते हुए)

मनसुखः अरे वो देखो सरपंच जी आ रहे हैं। उनसे इस बारे में कुछ बात करते हैं।

रामबाबूः हां, ये सही रहेगा।

(पदचाप.. धीरे-धीरे करीब आती हुई)

मनसुख व रामबाबूः ***(सामूहिक स्वर में)*** राम-राम सरपंच जी।

सरपंचः राम-राम जी, राम-राम.....। और कैसे हैं आप लोग।

मनसुखः हाल अच्छे नहीं हैं सरपंच जी।

सरपंचः क्यों.... क्या हुआ। सब ठीक तो है ना।

मनसुखः ये आप देख ही रहे हैं। ट्यूबवैल की खुदाई चल रही है लेकिन पानी का पता ही नहीं। अब ऐसे में आगे क्या होगा।

सरपंचः हां, ये तो है। ये समस्या तो बड़ी आम हो गई है। अब क्या करें.....। आखिर इसके जिम्मेदार भी हम ही लोग हैं।

रामबाबूः हम.....। इसके लिए हम भला कैसे जिम्मेदार हुए सरपंच जी।

सरपंचः अरे भाई देखो। जमीन के अंदर का पानी हम लगातार खींचते जा रहे हैं, तो वो कम तो होगा ही। अच्छा मनसुख, एक बात बताओ।

मनसुखः जी, पूछें सरपंच जी

सरपंचः बाबा के समय तुम्हारी जमीन में कितने ट्यूबवेल लगे थे।

मनसुखः हूं.....। या तो एक लगा होगा..... या अधिक से अधिक दो।

सरपंचः और अब कितने हैं।

मनसुखः **(धीरे-धीरे सोचते हुए)** एक, दो, तीन, चार..... और ये पांचवां। पांच (5) हैं सरपंच जी।

सरपंचः तो दो के हो गए पांच। अच्छा अब तुम बताओ रामबाबू। तुम्हारे खेतों में क्या है स्थिति।

रामबाबूः पहले तो वही..... एक-दो रहे होंगे। पर आज चार ट्यूबवेल चल रहे हैं।

सरपंचः अब बताओ। जब तुम दोनों के वहां ही पांच-छे (5-6) ट्यूबवेल बढ़ गए। तो यही हाल दूसरों का भी है। इतने सारे ट्यूबवेल जब लगातार चलेंगे तो जमीन का पानी तो कम होगा ही ना।

मनसुखः बात तो सही है आपकी सरपंच जी। लेकिन क्या करें, खेती के लिए पानी तो चाहिए ना।

सरपंचः अरे लेकिन पानी का इस्तेमाल तो तरीके से करोगे ना।

रामबाबूः तरीके से मतलब.....

सरपंचः तरीके से मतलब ये कि, जितने पानी से काम चल जाता है, ट्यूबवेल उतना ही चलाओ। ऐसा

नहीं कि पानी मिल रहा है तो उसका दुरुपयोग करो।

रामबाबूः ये तो है सरपंच जी। कई बार ट्यूबवेल से पानी निकलता ही जाता है और कोई देखने वाला तक नहीं होता।

सरपंचः ओर सुनो.....। शुक्र मनाओ कि अभी पानी मिल जा रहा है। कभी अपने बच्चों के बारे में भी सोचो। यदि यही हाल रहा तो भविष्य में पानी मिलेगा भी नहीं।

मनसुखः लोग कहते भी हैं तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए ही होगा।

सरपंचः वही तो.....। और देखो स्थिति बन भी वैसी ही रही है। आसपास के सभी जगहों पर पानी का संकट गंभीर होता जा रहा है।

मनसुखः अच्छा सरपंच जी, एक बात बताइए। ये जमीन के अंदर पानी हमेशा रहता है क्या।

सरपंचः हां.....। दरअसल जमीन के अंदर मिट्टी व चट्टानों के बीच बड़ी मात्रा में पानी इकट्ठा रहता है। इसी पानी का इस्तेमाल हम लोग ट्यूबवेल आदि में करते हैं, तकनीकी रूप से इसे भूजल कहा जाता है।

मनसुखः लगभग कितना पानी होता होगा जमीन के अंदर।

सरपंचः अब भय्या... । ऐसा है, हम कोई पानी के विशेषज्ञ तो हैं नहीं। जो ये सब तुम्हें बता सकें। लेकिन हां, अगर तुम लोग जमीन के अंदर के पानी के बारे में और जानना चाहते हो तो कल दोपहर में ग्राम पंचायत के कार्यालय आ जाना।

रामबाबूः ग्राम पंचायत.....। क्यों, वहां क्या है ?

सरपंचः ब्लाक से गरिमा मैडम का फोन आया था। वो बता रहीं थीं कि आजकल गांव-गांव जाकर भूजल को लेकर जानकारी दी जा रही है। वो ये भी कह रहीं थीं कि कोई विशेषज्ञ भी आने वाले हैं, पानी के बहुत बड़े जानकार हैं। वहां आ जाओगे तो कई सवालों के जवाब आसानी से मिल जाएंगे।

मनसुखः हां हां, क्यों नहीं। ये तो बहुत ही अच्छी बात है। क्या पता वे लगातार कम हो रहे पानी को बचाने का कोई तरीका भी बताएं। हम भी आएंगे सरपंच जी, क्यों रामबाबू।

रामबाबूः हां, हां, बिल्कुल। तो कितने बजे आना है।

सरपंचः उन्होंने ग्यारह बजे का टाइम दिया है। तुम लोग कुछ पहले ही आ जाना।

रामबाबूः आप चिंता न करें सरपंच जी। हम लोग देर नहीं करेंगे।

सरपंचः चलिए ठीक है। कल मिलते हैं फिर।

रामबाबू व मनसुखः (एकसाथ) राम राम सरपंच जी

सरपंचः राम-राम जी, राम-राम

(धीरे-धीरे दूर होती आवाज))

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

SCENE - 2

(कुछ लोगों के धीरे-धीरे बात करने का स्वर। कुर्सी-मेज खिसकाने की आवाज)

सरपंचः आओ, आओ। भई, बैठो-बैठो।

रामबाबू व मनसुखः (एक साथ) राम राम सरपंच जी

सरपंचः राम-राम जी, राम-राम। अच्छा किया तुम लोगों ने, समय से आ गए।

मनसुखः अब तो वे लोग भी आने ही वाले होंगे।

सरपंचः हां, कुछ समय पहले मेरी बात हुई थी। बस पहुंचने ही वाले होंगे।

रामबाबूः सरपंच जी, आपने अच्छा किया कि गांव के दूसरे लोगों को भी बुला लिया। जमीन के अंदर के पानी के बारे में सभी को जानकारी मिल जाएगी।

सरपंचः **(बीच में बात काटते हुए)** अरे ये लो.....। साहब लोग भी आ गए।

(कार की आवाज करीब आती हुई.. कार रुकने / ब्रेक की आवाज़)

सरपंचः नमस्कार मैडम जी। आइए-आइए। हम सभी आप लोगों का ही इंतजार कर रहे हैं।

गरिमा : नमस्कार सरपंच जी। कैसे हैं आप लोग।

सरपंच : हम लोग ठीक हैं मैडम जी, बस वही पानी वाली दिक्कत है।

गरिमा : चिंता मत किजिए। इसके लिए ही मेरे साथ हैं डॉक्टर मनोज। ये पानी के ही जानकार हैं और आपकी तकलीफ दूर करने का कोई ना कोई रास्ता जरूर निकाल देंगे।

सरपंचः नमस्कार डाक्टर साहब। हमारे गांव में आपका स्वागत है। बैठिये आप लोग... बैठिए।

(कुर्सियां खिसकाने की आवाज़)

डा. मनोजः नमस्कार जी नमस्कार। धन्यवाद आप लोगों का।

सरपंचः मैडम, लोग भी काफी आ चुके हैं। कार्यक्रम शुरू करें क्या।

गरिमा : हां, हां, बिल्कुल।

सरपंचः ***(सभी को संबोधित करते हुए)*** भाइयो। सबसे पहले मैं आप लोगों का परिचय अपने मेहमानों से करा दूं। ये हैं गरिमा जी, हमारे क्षेत्र की ग्राम विकास अधिकारी। इनसे तो आप भलीभांति परिचित ही हैं। और साथ में हैं डॉक्टर मनोज। डॉक्टर मनोज पानी के बहुत बड़े जानकार हैं। मैं अपनी ग्राम पंचायत की तरफ से आप दोनों का हार्दिक स्वागत करता हूं।

(तालियों की आवाज)

सरपंचः जैसा कि आप लोग जानते हैं कि हमारे सामने लगातार पानी का संकट गहराता जा रहा है। आज गरिमा जी और डा. मनोज हम लोगों को पानी के बारे में..... और खासतौर से भूजल यानी धरती के अंदर के पानी पर जानकारी देंगे। यदि आप लोगों के मन में कोई सवाल हो तो आप हमारे मेहमानों से पूछ भी सकते हैं। पहले मैं गरिमा जी से अनुरोध करुंगा कि वे अपनी बात गांववालों के सामने रखें।

गरिमा : धन्यवाद सरपंच जी। भाइयो-बहनो, नमस्ते। भूजल संरक्षण को लेकर कुछ समय से एक कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है, जिसके तहत गांवों में लोगों को विभिन्न तरह की जानकारी दी जा रही है। इसीलिए हम लोग आज आपके गांव आए हैं। आप लोग अपने सवाल रख सकते हैं। इससे आपकी दिक्कतों की जानकारी हमें हो जाएगी और हम लोग भी उनका उपाय सुझाने की कोशिश करेंगे।

मनसुखः मैडम जी, हमें तो ये समझ ही नहीं आ रहा है कि आखिर जमीन के अंदर का पानी इतनी बड़ी समस्या क्यों बन गया है ?

गरिमा : कही कहा आपने। धरती के अंदर पानी की कमी होना मौजूदा वक्त की एक बड़ी दिक्कत है। जमीन के अंदर लगातार पानी की कमी होती जा रही है। इसकी कई वजहें हैं....। पानी कमी के साथ साथ भूजल में हो रहा प्रदूषण भी एक बड़ी समस्या के रूप में हमारे सामने आ रहा है।

हीरा : क्या कहा ! जमीन के अंदर भी प्रदूषण.....। हम तो सोचते थे कि प्रदूषण सिर्फ बाहर ही होता है।

गरिमा : यूं तो हमारे देश में ज्यादातर भूजल साफ है। फिर भी सभी जगहों पर ऐसी स्थिति नहीं है। जमीन के अंदर का पानी भी लगातार प्रदूषित हो रहा है। भूजल में ऐसे तत्वों की मात्रा बढ़ती जा रही है जिनकी अधिकता हमारी सेहत के लिए खतरनाक है। प्रदूषित भूजल समूचे पारिस्थिति तंत्र को भी प्रभावित कर रहा है।

हीरा : वो कौन-कौन से तत्व हैं जिनसे जमीन के अंदर का पानी प्रदूषित हो रहा है।

गरिमा : आर्सेनिक, फ्लोराइड, आयरन, नाइट्रेट जैसे तत्वों की अधिकता भूजल को प्रदूषित कर रही है। इसमें आर्सेनिक को सबसे अधिक खतरनाक माना जाता है। देश के दस राज्य इससे सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। इन राज्यों में हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, असम, मणिपुर और कर्नाटक शामिल हैं।

हीरा : आखिर ऐसी कौन सी वजहें हैं जिनसे जमीन के अंदर का पानी प्रदूषित हो रहा है।

गरिमा : इसकी कई वजहें हैं.....। जैसे घरेलू सीवेज, सैप्टिक टैंक, उद्योगों से निकलने वाला कचरा वगैरह। इसके अलावा कृषि क्षेत्र में रासायनिक खाद व कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग भी इसका एक बड़ा कारण है। इससे जमीन के अंदर का पानी बड़ी मात्रा में प्रदूषित होता है।

रामबाबूः अच्छा डॉक्टर साहब, ये बताइए कि जमीन के नीचे पानी कितना होता है। ये तो बहुत अधिक होता होगा ना.....।

डा. मनोजः जी हां। पानी को नापने की एक इकाई होती है घनमीटर। यानी एक मीटर लम्बे, चौड़े, ऊंचे बाक्स में भरा पानी.....एक घनमीटर पानी कहलाएगा। सालाना हिसाब से देखें तो भारत में जमीन के अंदर करीब चार सौ चालीस (440) अरब घनमीटर पानी बना रहता है। जिसमें से लगभग पैंतीस (35) अरब घनमीटर पानी प्राकृतिक रिसाव में चला जाता है। ऐसे में पूरे देश के लिए चार सौ अरब घनमीटर से ज्यादा पानी रहता है।

रामबाबूः इतना सारा पानी.....। मगर ये आता कहां से होगा।

डा. मनोजः भूजल का सबसे बड़ा स्रोत तो बारिश ही है। जमीन के अंदर लगभग सत्तर प्रतिशत पानी बारिश से आता है। शेष तीस प्रतिशत पानी, दूसरे जरियों से आता है, जैसे कि नहरों से, तालाब से.....या फिर थोड़ा-बहुत पानी सिंचाई से दोबारा जमीन के अंदर चला जाता है।

रामबाबूः अरे, जब इतना पानी जमीन के नीचे जा रहा है तो फिर चिंता किस बात की है।

डा. मनोजः चिंता तो है भाईसाहब। दरअसल जितना पानी जमीन के नीचे जा रहा है, उसकी तुलना में काफी अधिक पानी हम जमीन से निकाल रहे हैं। जिससे भूजल स्तर लगातार कम होता जा रहा है।

रामबाबूः भूजल स्तर.....। ये क्या होता है साहब।

डा. मनोजः भूजल स्तर का मतलब है, जमीन के नीचे कितनी गहराई में हमें पानी उपलब्ध हो जाता है। यदि पृथ्वी की सतह से 10 मीटर पर पानी मिल जाएगा तो वहां का भूजल स्तर 10 मीटर होगा। कहीं-कहीं भूजल स्तर बहुत नीचे चला जाता है तो फिर कुंए, ट्यूबवेल आदि काम नहीं कर पाते।

मनसुखः ओह.....। इसका मतलब हमारे गांव में भी भूजल स्तर काफी नीचे चला गया है। आजकल मैं नए ट्यूबवेल की खुदाई करा रहा हूं और अस्सी फिट खुदाई होने पर भी पानी नहीं निकला है।

डा. मनोजः अस्सी फिट.....। तब तो आपके गांव में स्थिति गंभीर होती जा रही है।

सरपंचः सर वैसे सामान्य रूप से भूजल स्तर कितना होता है।

डा. मनोजः सरपंच जी, ये अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग हो सकता है। भारत सरकार के जल संसाधन मंत्रालय ने केन्द्रीय भूजल बोर्ड का गठन किया है। ये बोर्ड हर साल देश के विभिन्न हिस्सों में भूजल स्तर को नापता है। पिछले साल 2016 में उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है।

सरपंचः उस रिपोर्ट में भूजल स्तर कितना बताया गया है।

डा. मनोजः इसके तहत देश के अलग-अलग हिस्सों के चौदह हजार सात सौ सत्तर (14770) कुओं का अध्ययन किया गया। इसमें पाया गया कि देश का औसतन भूजल स्तर 2 से 20 मीटर तक है। हालांकि कुछ एक स्थानों में तो जलस्तर 100 मीटर से भी ज्यादा है।

रामबाबूः 100 मीटर..... ये तो बहुत ज्यादा गहराई हुई ना।

डा. मनोजः जी हां। पूरे देश में सबसे अधिक जलस्तर महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में पाया गया। वहां जमीन से 153 मीटर की गहराई पर पानी मिला था। दिल्ली व राजस्थान के भी कई हिस्सों में 40 मीटर से अधिक गहराई पर पानी मिला था। पिछले सालों की तुलना करें तो कुछ स्थानों को छोड़कर अधिकांश स्थानों पर जलस्तर में गिरावट आई है।

रामबाबूः तो क्या सभी राज्यों में यही स्थिति है।

डा. मनोजः नहीं- नहीं, ऐसा नहीं है। असम, आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, गुजरात आदि राज्यों के कुछ हिस्सों में भूजल स्तर 2 मीटर के लगभग है। वहां आसानी से पानी उपलब्ध हो जाता है। लेकिन अगर इस मसले पर ध्यान नहीं दिया गया तो वहां भी जलस्तर नीचे जाते रहेगा।

रामबाबूः तो साहब, जलस्तर को बनाए रखने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

डा. मनोजः सबसे पहले तो हमें भूजल को बनाए रखने के स्रोतों को बढ़ाना होगा। जैसा मैंने आपको पहले बताया था कि भूजल का सबसे बड़ा स्रोत है बारिश। लेकिन बारिश का अधिकांश पानी बेकार बह जाता है। बहता हुआ पानी समुद्र में चला जाता है, जो खारा होकर किसी काम का नहीं रहता।

रामबाबूः तो क्या बारिश का पानी भी रोका जा सकता है।

गरिमा : हां, क्यों नहीं। पहले तक गांवों में बड़े-बड़े गड्ढे बनाए जाते थे, जिनमें बारिश का पानी इकट्ठा हो

जाता था और धीरे-धीरे जमीन के नीचे चला जाता था। यह भूजल स्तर को बेहतर बनाने का एक अच्छा माध्यम था।

हीरा : हां, मुझे याद है। पहले मेरे मायके के गांव में भी कुछ ऐसे ही गड्ढे थे, लेकिन बाद में तो सब बरबाद ही हो गए। उन गड्ढों के आसपास पेड़-पौधे भी लगाए जाते थे। अब तो वहां के पेड़ भी नहीं दिखाई देते।

गरिमा : बिल्कुल। पेड़-पौधे भी बारिश के पानी को रोकने का काम करते हैं। लेकिन अब अधिकांश स्थानों में न उस तरह के गड्ढे-तालाब दिखाई देते हैं और न ही वैसे पेड़-पौधे। इसका सीधा असर भूजल पर पड़ता है।

हीरा : जब जमीन के अंदर पानी ही नहीं पहुंचेगा तो जल स्तर तो घटता ही रहेगा।

डा. मनोजः सही कहा आपने । एक तो जमीन के अंदर पानी कम पहुंच रहा है और दूसरा भूजल का उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। यदि रिचार्ज ज्यादा हो, तब तो अधिक उपयोग भी नुकसानदायक नहीं है। लेकिन कम रिचार्ज व अधिक उपयोग से स्थिति लगातार चिंताजनक होती जा रही है।

मनसुखः ओह.....। ऐसे तो जमीन के अंदर लगातार पानी कम होता रहेगा। डॉक्टर साहब, क्या कोई ऐसा तरीका भी है जिससे हमें पता चले कि पहले जमीन के अंदर पानी की क्या स्थिति थी और अब क्या है ?

डॉ मनोज : हां.. हां है। भूजल दोहन प्रतिशत के जरिए इसे समझा जा सकता है।

मनसुख : मतलब ?

डॉ मनोज : मतलब ये कि किसी इलाके में कुदरती तौर पर वहां की धरती के अंदर जितना पानी गया, उसका अंदाजा अंदाजा लगा लिया जाता है। इसके बाद यह जाना जाता है कि वहां धरती के अंदर से साल भर में हमने कितना पानी विभिन्न उपयोग के लिए निकाला। पानी के जमाव और निकासी के इस संबंध के प्रतिशत को ही भूजल दोहन प्रतिशत कहा जाता है।

मनसुखः बात कुछ सही ढंग से समझ में नहीं आई।

डा. मनोजः देखिए, माना किसी वर्ष विभिन्न स्रोतों से जमीन के अंदर 100 लीटर पानी पहुंचा। यदि उसमें से हम 70 लीटर तक पानी निकालें तो वहां भूजल दोहन 70 प्रतिशत कहलाएगा..... जिसे सुरक्षित माना गया है। लेकिन अगर हमने 100 लीटर रिचार्ज की तुलना में 120 लीटर पानी निकाल लिया तो भूजल दोहन 120 कहलाएगा, जोकि एक बेहद गंभीर स्थिति होगी।

रामबाबूः ***(कुछ हंसते हुए)*** ये तो वही बात हुई ना, आमदनी अठन्नी, खर्चा रुपैया। लेकिन क्या सही में, कहीं

ये आंकड़ा 100 से पार भी हो गया है ?

डा. मनोजः जी हां। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब व राजस्थान..... देश के यह चार राज्य ऐसे हैं, जहां रिचार्ज की तुलना में जमीन के अंदर से अधिक पानी निकाला जा रहा है। इन सभी राज्यों में स्थिति काफी गंभीर होती जा रही है।

सरपंचः इनके अलावा अन्य राज्यों की स्थिति क्या है।

डॉ. मनोजः उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पुड्डुचेरी और तमिलनाडू में भी स्थिति चिंताजनक है। ये राज्य 70 प्रतिशत के सुरक्षित दायरे से अधिक पानी जमीन से निकाल रहे हैं। जिस तेजी से अधिक पानी निकालने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, वह भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा बन सकता है।

सरपंचः सही बात है.....। यदि इतना अधिक पानी का उपयोग होता रहा तो भविष्य के लिए तो पानी बचेगा ही नहीं।

मनसुखः लेकिन पानी का इतना अधिक उपयोग होता कहां होगा।

गरिमा : आपको शायद ये जानकर हैरानी होगी कि आप लोग भी भूजल का काफी ज्यादा ही इस्तेमाल करते हैं।

मनसुख : हम लोग ? हम लोग तो बस सिंचाई ही तो करते हैं इससे।

गरिमा : हां, सही कहा आपने। अब हम अपने प्रदेश यूपी (उत्तर प्रदेश) की ही बात करें तो यहां की करीब सत्तर (70) प्रतिशत सिंचित खेती भूजल संसाधनों पर ही निर्भर है।

मनसुख : वो तो ठीक है लेकिन और लोग भी तो भूजल का इस्तेमाल करते होंगे ना ?

गरिमा : हां, हां, क्यों नहीं। हमारे राज्य में पीने के पानी की करीब अस्सी प्रतिशत जरूरत भी भूजल से ही पूरी होती है। इसके अलावा कल-कारखानों और तमाम उद्योगों में जो पानी इस्तेमाल होता है उसकी पिच्यासी (85) फीसदी आपूर्ति जमीन के अंदर के पानी से ही होती है। ***(कुछ हंसते हुए)*** मतलब ये कि, कोई किसी से कम नहीं है।

डॉ मनोज : एक खास तथ्य ये भी है कि आजादी के वक्त हमारे देश में कुल कृषि का केवल बीस फीसदी हिस्सा ही सिंचित था और आज यह पैंतीस प्रतिशत से ज्यादा हो गया है।

मनसुखः ओह.....। इसका मतलब कि सिंचाई में नियंत्रण से जमीन के पानी को काफी बचाया जा सकता है।

गरिमा : बिलकुल। इसके लिए सिंचाई के तरीकों को भी बदलने की जरूरत है। कुछ सालों से नहर, तालाब आदि से सिंचाई करने की प्रवृत्ति भी कम हुई है।

डॉ मनोज : एक अध्ययन के मुताबिक हमारे देश में हर साल करीब दो सौ तीस *(230)* घन किलोलीटर पानी जमीन से निकाला जाता है। और इस पानी का करीब साठ फीसदी उपयोग खेती में सिंचाई के लिए किया जाता है।

हीरा : लेकिन मैडम जी, जब गांव में तालाब ही नहीं बचे और नहरों में पानी ही ना हो हम लोग भी क्या करें।

गरिमा : आप ठीक कह रही हैं। शहरों की हालत तो इससे भी ज्यादा खराब है। वहां भले ही लोग खुद धरती से पानी कम खींच रहे हों लेकिन दूर-दूर से जमीन के अंदर से निकाला हुआ पानी पाइपों के जरिये शहरी लोगों के घरों तक पहुंचता है।

डॉ मनोज : गांवों के तालाबों को बचाने की जिम्मेदारी भी तो आखिर हमारी ही है। और यूं भी, सिर्फ सरकारी योजनाओं की बदौलत सब कुछ नहीं हो सकता, जब तक कि उनमें जनता की भागीदारी ना हो। तालाबों और नहरों के बारे में कोई दिक्कतें हों तो भी आप हमसे बात कर सकते हैं।

हीरा : ठीक है डॉक्टर साहब।

गरिमा : बस, हमने ध्यान ये रखना है कि जमीन के अंदर का पानी बर्बाद ना करें। मैं तो ये कहूं कि किसी भी स्रोत के पानी को बर्बाद करने से रोकना जरूरी है।

सरपंचः आप सही कह रही हैं मैडम। ऐसा तो हम अपने गांव में भी देख सकते हैं। ट्यूबवेलों की संख्या लगातार बढ़ रही है और नहर-गूल, तालाब आदि की ओर कोई ध्यान ही नहीं देता।

गरिमा : हमें ना सिर्फ पुराने तालाबों की सुध लेनी होगी बल्कि नये तालाबों के निर्माण पर भी ध्यान देना होगा। बारिश के पानी को जमा करने के लिए चेक बांध बनाकर, नये जंगलों को पनपाकर और मौजूदा जंगलों को बचाकर हम भूजल स्तर को कायम रख सकते हैं।

डा. मनोजः इसके साथ ही हमें फसलों पर भी ध्यान देना होगा। जिन इलाकों में भूजल स्तर लगातार कम हो रहा है, उन स्थानों पर हमें ऐसी फसलें लगानी होंगी, जिनके लिए कम पानी की आवश्यकता हो।

मनसुखः साहब, आपने तो आज हमारी आंखें खोल दी। हम तो अपने ही पांव में कुल्हाड़ी मार रहे थे। आज से हम लोग आपकी सभी बातों का ध्यान देंगे। हम लोग कम से कम भूजल का इस्तेमाल करेंगे।

सरपंचः सही बात है मनसुख। मैं भी पंचायत के स्तर पर कोशिश करुंगा कि जमीन के पानी को रिचार्ज करने के लिए तालाब आदि बनाए जा सकें। बारिश के पानी का अधिक से अधिक इस्तेमाल हम भूजल स्तर को बढ़ाने में कर सकें।

डा. मनोजः यदि आप लोग ऐसा करते हैं तो यकीन मानिए आपके इलाके का भूजल स्तर ऊपर आएगा।

सरपंचः और मनसुख..... तुम सिर्फ नाम के ही मनसुख नहीं रहोगे.....। तुम्हारा मन भी वास्तव में सुखी हो जाएगा।

मनसुखः **(हंसते हुए)** वो तो है सरपंच जी।

(सामूहिक हंसी... धीरे-धीरे धीमी पड़ती हुई)

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

SCENE – 3

(जमीन में खुदाई करने वाली ड्रिल मशीन चलने की आवाज.. धीरे-धीरे बंद होती हुई)

मनसुख : ***(खुशी से, उत्साहित स्वर में)*** लो जी... आखिरकार हमारे इस ट्यूबवेल में भी साफ पानी आ ही गया।

(बड़े पाइप से पानी निकलने की आवाज़)

हीरा : चलो अच्छा हुआ जी। अब हमारी फसलें पानी के बिना बर्बाद नहीं होंगी।

मनसुख : हां, भले ही गहरी खुदाई करवानी पड़ी, लेकिन पानी तो मिल ही गया ना।

हीरा : लेकिन इसमें इतना खुश होने की भी जरूरत नहीं।

मनसुख : क्यों, भला खुश क्यों ना हों ?

हीरा : अरे... अरे..। आप तो नाराज हो गये। मेरा मतलब ये है कि हमें पानी मिल गया, ये तो अच्छी बात है। लेकिन हमारे बच्चों को भी जिंदगी भर पानी की कमी ना हो, इसका इंतजाम भी तो हमें ही करना होगा ना।

मनसुख : वो भला कैसे।

हीरा : क्यों, पानी आते ही वो सारी बातें भूल गये जो ग्राम विकास अधिकारी मैडम ने कही थीं, पिछली बैठक में।

मनसुख : हां... हां... याद आया। अच्छा याद दिलाया तुमने। अभी भले ही यहां जमीन से पानी निकल रहा हो, लेकिन हालात हमेशा ऐसे ही नहीं रहेंगे। पानी बनाये रखने के लिए इसे बचाना बेहद जरूरी है। ***(कुछ ऊंची आवाज़ में)*** भाई, जरा ये इंजिन भी बंद कर दो, पानी यूं ही बर्बाद हो रहा है।

(पानी गिरने की आवाज़ धीरे-धीरे बंद होती हुई)

हीरा : अब मैंने भी एक इरादा किया हुआ है।

मनसुख : कैसा इरादा ?

हीरा : अपने गांव के आसपास ये तो तमाम बेकार जमीन पड़ी है, मैंने उसमें पेड़ लगाने की ठानी है। मैडम जी ने कहा कि पौध का इंतजाम वो ब्लॉक से करवा देंगी।

मनसुख : ये तो बहुत अच्छी बात है। आखिर हमने अपनी अगली पीढ़ी के लिए भी तो पानी के बारे में सोचना है। और हां, तुम एक काम और करना।

हीरा : वो क्या ?

मनसुख : ***(शरारतपूर्ण हंसी के साथ)*** कुछ पौधे अपने मायके भेजना मत भूलना.... शायद वहां के लोगों को भूजल संरक्षण की अहमियत समझ में आ जाए।

(मनसुख और हीरा की समवेत हंसी / धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई)

----------CLOSING MUSIC----------